❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स्तोतुर्मघवन् काममा पृण।।

ऋग्वेद 1/57/5

हे ऐश्वर्यशालिन्! भक्त की कामनाओं को पूर्ण कर।

O the Bounteous Lord! fulfil all the good wishes and desirer of your devotees.

वर्ष 42, अंक 26 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 20 मई, 2019 से रविवार 26 मई, 2019

विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120

दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद दिल्ली के तत्त्वावधान में आर्य विद्यालयों की बैठक सम्पन्न

विद्यालयों में बच्चों को वैदिक संस्कार देने हेतु सात सूत्री कार्यक्रम लागू करने का आह्वान

प्रातः 8 से सायं 4 बजे तक सभी विद्यालयों के चेयरमैन, प्रबन्धक एवं प्रधानाचार्यों की चली कार्यशाला

'कैसे हो आर्य प्रतिभा विकास' के अन्तर्गत प्रतिभाशाली बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए दी जाएंगी विशेष सुविधाएं

"हमारा मतभेद किसी से भी किसी भी विषय पर हो सकता है किन्तु कर्म फल ऐसा सिद्धांत है जिस पर सबको एकमत होना ही पड़ता है। हम चलते हैं यह कर्म है और मंजिल तक पहुंचें यह उसका फल है।"

ये विचार आचार्य वागीश जी ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद दिल्ली के तत्त्वावधान में 17 मई (शुक्रवार) 2019 को आर्य समाज हनुमान रोड में विभिन्न विद्यालयों के चेयरमैन, मैनेजरों, प्रधानाचार्यों एवं अध्यापकों की कार्यशाला में कर्म फल सिद्धान्त पर चर्चा करते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने विषय की विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए कहा कि कार्य, कारण और सिद्धांत, संयोग, आकस्मिक संयोग, सुख-दु:ख, किसी का अच्छा या बुरा करना। कर्म के आधार पर पुनर्जन्म। कोई न कोई ऐसी शक्ति है जिस पर हम विवश हो जाते हैं। पाप और पुण्य क्या है। ईश्वर सर्वव्यापक है। वह हमें हर जगह से देखता है। इस की सुंदर व्याख्या की। धर्म को जब तर्क से जोड़ा जाता है तो वह उत्थान का कारण बनता है। जब धर्म को अंधविश्वास से जोड़ा जाता है तो वह पतन का कारण बनता है।

कार्यशाला का उद्घाटन विभिन्न विद्यालयों की प्रधानाचार्यों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर श्रीमती श्रीबाला चौधरी, नीरज मेंहदीरत्ता, किरण तलवार, उर्मिल मनचंदा, अर्चना वीर, अर्चना पुष्करणा, शशि बरगा, हेमा छाबड़ा, वीना आर्या उपस्थित थीं। कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. श्रीमती उमाशशि दुर्गा जी ने की।

श्रीमती अनु वासुदेव ने कहा कि आज की गोष्ठी का विषय है 'शिक्षा द्वारा समाज कल्याण'। आज बच्चे डाक्टर, इंजीनियर, वकील व प्रशासनिक अधिकारी बनकर उच्च पदों पर कार्य कर रहे हैं। हमारा उद्देश्य है - विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ अपनी संस्कृति व संस्कारों से

- शेष पृष्ठ 4 पर

कार्यशाला को सम्बोधित करते आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के प्रस्तोता श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी एवं पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी

सभा द्वारा आयोजित कार्यशाला में उपस्थित विभिन्न आर्य शिक्षण संस्थाओं के माननीय प्रधान, प्रबन्धक, प्रधानाचार्य एवं प्रमुख शिक्षक महानुभाव।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई - अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में आयोजित

38वें वैचारिक क्रान्ति शिविर का समापन समारोह

-: दिनांक :-	-: समय :-	-: अध्यक्षता :-	स्थान : मावलंकर हॉल,
26 मई, 2019 (रविवार)	प्रातः 8:30 से 1:30 बजे	पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी	कॉन्स्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थानों के अधिकारियों एवं सदस्यों से निवेदन है कि अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे सैंकड़ो कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें। ये महर्षि दयानन्द जी के वे सिपाही हैं जो विपरीत परिस्थितियों में रहकर भी वैदिक धर्म को बचाए रखने, प्रचारित करने एवं भारतीय वैदिक संस्कृति को संजोए रखने के लिए कार्य कर रहे हैं। आपकी उपस्थिति और आशीर्वाद इन सभी कार्यकर्ताओं में एक नई ऊर्जा एवं शक्ति का संचार करेगी।

निवेदक

महाशय धर्मपाल	धर्मपाल गुप्ता	जोगेन्द्र खट्टर	योगेश आर्य	सुरेशचन्द्र आर्य	प्रकाश आर्य	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य
प्रधान	व.उ. प्रधान	महामन्त्री (9810040982)	कोषाध्यक्ष	प्रधान	मन्त्री	प्रधान	महामन्त्री
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, नई दिल्ली				सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा		दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	

वेद-स्वाध्याय

ईर्ष्या - नाश

ईर्ष्याया ध्राजिं प्रथमंप्रथमस्या उतापराम्।
अग्निं हृदय्य शोकं तं ते निर्व पयामसि।। *अथर्व० 6/18/1*
ऋषि: अथर्वा।। देवता - ईर्ष्याविनाशनम्।। छन्द: अनुष्टुप्।।

शब्दार्थ - **ईर्ष्याया:** = ईर्ष्या की **प्रथमाम्** = पहली ही **ध्राजिम्** = वेगवती गति को, ज्वाला को **निर्वापयामसि** = हम बुझाते हैं **उत** = और **प्रथमस्या: अपराम्** = इस पहली से अगली ज्वाला को भी बुझाते हैं, इस तरह हे मनुष्य! **ते** = तेरी **तम्** = उस ईर्ष्यारूपी **हृदय्य। अग्निम्** = हृदय में जलनेवाली अग्नि को **शोकम्** = तथा उसके शोक-सन्ताप को **निर्वापया मसि** = बिलकुल शान्त कर देते हैं।

विनय - बड़ा आश्चर्य है कि मनुष्य दूसरे की बढ़ती को सह नहीं सकता। बजाए इसके कि वह अपने साथी की बढ़ती को देखकर प्रसन्न हो, प्रेमयुक्त हो, वह उसके प्रति ईर्ष्यालु हो जाता है। यह ईर्ष्या बड़ी बुरी प्रवृत्ति है। जब किसी मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या की अग्नि जल उठती है तब यह उसे बुरी तरह सन्तप्त करती है। इतना ही नहीं, किन्तु ईर्ष्या की अग्नि के बढ़ जाने पर कई संग्राम छिड़ चुके हैं जिनमें हजारों-लाखों लोग व्यर्थ में तबाह हो गये हैं। इसलिए ईर्ष्याग्नि को बढ़ने नहीं देना चाहिए। जब ईर्ष्या की पहली ही ज्वाला चमके तभी उसे बुझा देना चाहिए। ईर्ष्या के प्रथम वेग को ही रोक देना चाहिए। सोचना चाहिए "यदि मेरे अमुक साथी को सम्पत्ति मिली है तो उसे प्यार किया जाता है, या उसे प्रतिष्ठा व उच्चपद मिलता है तो इससे मुझे क्यों कुढ़ना चाहिए, मुझे क्यों न प्रसन्न होना चाहिए! यदि मैं उतना योग्य नहीं हूँ, तो धैर्यपूर्वक मुझे भी वैसा गुणी बनने का यत्न करना चाहिए। मुफ्त में अपने को जलाना तो कभी नहीं चाहिए।" और बार-बार 'मैत्री भावना' कर-करके उस अपने सौभाग्यशाली साथी से अपने को पूरी तरह जोड़ लेना चाहिए, एक कर लेना चाहिए। अन्त में उससे इतना अभित्रात्मा बन जाना चाहिए कि उसकी बढ़ती का स्मरण आने पर अपना आत्मा उतना ही आनन्दित होने लगे जितना उस स्मरण से उस अपने साथी का आत्मा होता है। तब समझना चाहिए कि मैत्रीभावना पूर्णावस्था में पहुँच गई है। यह अवस्था पहुँचने पर सब ईर्ष्याग्नि अवश्य बुझ जाएगी और उसकी जगह प्रेमधारा बह निकलेगी।

पर इतने से निश्चिन्त नहीं हो जाना चाहिए, क्योंकि आग बुझ-बुझकर भी फिर-फिर बिना जाने जल उठा करती है। असावधानी के क्षणों में यदि फिर ईर्ष्याग्नि चुपके से सुलगने लगे, तो फिर से ऐसे विचार और भावना की जलधारा से इसे फिर शान्त कर देना चाहिए। यह निश्चित है कि उसका यह दूसरा वेग मन्द होगा। इसी तरह आगे भी करते जाना चाहिए जबतक कि यह हृदय की अग्नि और इसका शोक-सन्ताप बिलकुल न बुझ जाए और इनकी जगह प्रेम की शीतलता और आत्मैक्य की जलधारा न बहने लगे।

हे ईर्ष्या सन्तप्त पुरुष! हम तेरी ईर्ष्याग्नि को प्रेमधारा द्वारा सर्वथा बुझा देते हैं।

-: साभार :-वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

नजरिया राजनीति और मीडिया का : हत्या-हत्या में अन्तर!

सोचने की बात यह है भला जो इन्सान 25 सालों तक वह किसी न किसी रूप में अंग्रेजों का कैदी रहा उसकी देशभक्ति पर कैसा शक? दूसरा सवाल राजस्थान के शिक्षा मंत्री से भी है यदि सावरकर अंग्रेजो का दोस्त था तो अंग्रेज क्यों बार-बार जेल में डाल रहे थे? साथ ही राजस्थान कांग्रेस वे कारण भी जरुर बताये कि यदि 25 साल जेल काटने के बाद सावरकर देशभक्त नहीं हो सके तो मात्र कुछ साल जेल में रहे नेहरु जी किस लिहाज से देशभक्त और भारतरत्न हो गये?

देश की राजधानी दिल्ली के मोती नगर थानाक्षेत्र में स्थित बसई दारापुर गांव में ध्रुव त्यागी को 11 मजहबी उन्मादियों ने घेरकर बेहद ही क्रूरतम तरीके से मारा था जिसमें 4 महिलायें भी शामिल थीं। बताया जा रहा है ध्रुव त्यागी अपनी बेटी को लेकर जा रहा था तभी कुछ लड़के उसके ऊपर फब्तियां कसने लगे। ध्रुव त्यागी ने विरोध किया तो उन्होंने बेरहमी से हत्या कर दी गई। और उसके भाई पर भी जानलेवा हमला किया गया, लड़की का भाई जिंदगी और मौत से जूझ रहा है। यह घटना 11 मई देर रात की है।

जो हुआ है उसका मुझे गहरा दुख है लेकिन हम किसी के खिलाफ नफरत का माहौल नहीं चाहते। हमारी किसी पंथ से कोई शिकायत नहीं है। हां हमारी शिकायत उन नेताओं से हैं जो नेता अखलाक के मामले में दिल्ली से दादरी पहुंचे थे और उनके परिवार को लाखों के चेक और संवेदना व्यक्त की थी। मुझे शिकायत है इस मामले में उन बुद्धिजीवियों, कलमकारों, प्रेस पत्रकारों से जो अखलाक की हत्या से दु:खी होकर अपने अवार्ड वापिस कर रहे थे। शिकायत उन टीवी चैनलों से भी है जो अखलाक की मौत को देश के लिए गहरा धब्बा बताकर असहिष्णुता का माहौल बता रहे थे। उत्तरप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव फ्लेट बाँटने पहुँच गये थे और आजमखान यूएनओ को चिट्ठी लिख रहे थे कि देखिये साहब भारत में मुसलमान सुरक्षित नहीं हैं।

बसई दारापुर में सभी हत्यारे एक मजहब विशेष के थे लेकिन देश में उनकों हत्यारा नहीं कहा जा सकता। क्योंकि वे कथित अल्पसंख्यक समुदाय से आते हैं। हत्यारे तो यहाँ सिर्फ वे लोग होते हैं जो पहलु खान और अखलाक की हत्या करते हैं। इसलिए बसई दारापुर के हत्यारों को मीडिया मनचले कह रही है। बावजूद इसके कि हत्यारे ने अपनी मां से कहा कि घर से सामान लाओ, मां घर से चाकू लेकर आई। हत्यारे के परिवार के अन्य लोगों ने लड़की के पिता ध्रुव त्यागी को पकड़ लिया और हत्यारे ने उन्हें चाकू से गोद दिया। वारदात में शमसेर का पिता, मां, दोनों भाई, तीन-चार बहनें, एक दामाद और अन्य लोग शामिल हैं लेकिन मीडिया की नजर में सब मनचले हैं।

एक पल को सोचिए यदि इस घटना में मृतक मुसलमान होता और हत्यारा किसी अन्य धर्म से क्या तब आपको मीडिया में यह खामोशी दिखाई देती? ऐसा नहीं है, मीडिया हमेशा खामोश रहता है नहीं मीडिया पहले मजहब देखता है फिर बोलता है क्योंकि जब राजस्थान में रकबर खान की हत्या होती है तो तब मीडिया देश को सिर पर उठा लेता है। हैरत करने वाली बात यह भी थी कि मारा गया रकबर खान वांटेड अपराधी था लेकिन उसे मीडिया के एक विशेष वर्ग द्वारा मासूम बताया यहां तक कि विदेशी अखबारों में भी भारत को बदनाम करने के लिए एजेंडा चलाया गया।

लेकिन जब दिल्ली के मानसरोवर गार्डन में घर से एयरहोस्टेस बनने की आकांक्षा लेकर रिया गौतम नाम की एक युवती घर से निकलती है और घर के बाहर उसे आदिल खान, खुलेआम चाकू से ताबड़तोड़ वार करके मौत के घाट उतार देता है, तो तब मीडिया इसे प्रेम प्रसंग बताकर छोड़ देती है।

जब राजस्थान के जोधपुर में शम्भूलाल रेंगर अफराजुल की हत्या करता है तब मीडिया और सैक्यूलर दल देश को सिर पर उठा लेते हैं लेकिन जब दिल्ली के विकासपुरी में कुछ मुस्लिम युवकों की भीड़ डॉक्टर नारंग को उनके घर से बाहर सड़क पर पीट-पीटकर मार डालती है तब यह कहा जाता है कि कृपया घटना को साम्प्रदायिक रंग देने का काम न करें।

मैं उस देश की बात कर रहा हूँ जिस देश का एक उपराष्ट्रपति अपने कार्यकाल समाप्ति पर मीडिया से कहता है कि देश में मुसलमान सुरक्षित नहीं है। जब वह ऐसा कह रहे होते हैं उसी दौरान यूपी के इलाहाबाद में हिन्दू युवती हिना तलरेजा के साथ अदनान खान अपने दोस्तों के साथ मिलकर दोस्तों से हिना का गैंगरेप करवाता है उसके बाद उसकी गोली मारकर उसकी हत्या कर देता है।

हम थक गये हैं सुन-सुनकर की देश में मुसलमान सुरक्षित नहीं है। मुसलमान खुद को डरा हुआ महसूस कर रहे हैं। इसके बाद फिर खबर होती है कि दिल्ली में एक फोटोग्राफर अंकित सक्सेना की कुछ मजहब विशेष के लोग सरेआम गला काटकर उसकी हत्या कर दी। क्योंकि वह एक मुस्लिम लड़की से प्यार करता था। 23 साल के अंकित पर मजहबी हत्यारे उसकी जिंदगी पर मौत का शिकंजा कस देते हैं उसे गैर मजहब की लड़की से प्यार करने की सजा दे देते हैं। उसे दिल्ली में बीच सडक पर, तमाशबीन भीड़ के बीच मार डाला जाता है। यहाँ भी मजहबी चादर ओढ़ने वाले चंद शैतानों को अल्पसंख्यक बताकर यह कहा गया कि घटना में साम्प्रदायिक तनाव फैलाने का काम न करें और इस हत्या को धर्म से न जोड़ें। एक भी सवाल यह न उठा कि इसे धर्म से क्यों न जोड़े?

आखिर क्यों इन बुद्धिजीवी लोगों को सिर्फ मुसलमान के मरने पर देश में असहिष्णुता नजर आती है? अवार्ड वापसी इन्हें तब ही क्यों याद आती है? आप इन लोगों को समझिये, ये वे लोग हैं जो एक एजेंडे के तहत काम करते हैं। इन लोगों को अखलाक की हत्या नजर आती है, जुनैद की हत्या नजर आती है, मगर केरल में जब 26 वर्ष के सुजीत की हत्या दिन दहाड़े उसके बूढ़े माता-पिता की आंखों के सामने कर दी जाती तब सब खामोश होते हैं। 29 जनवरी, 2014 को देश की राजधानी दिल्ली में एक हत्या हुई। अरुणाचल प्रदेश के नीडो तानियाम को पहले नस्लवादी गाली दी गई फिर उसकी पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। बैंगलोर में प्रशांत पुजारी और आगरा में अरुण माहौर की हत्या कर दी गई।

- शेष पृष्ठ 6 पर

देश को पुरुष आयोग की आवश्यकता?

सुनने में ही सवाल जरा टेढ़ा सा है क्योंकि अक्सर कथित नारीवादी समूहों द्वारा हमारे समाज को पितृसत्तामक के अलावा महिलाओं पर अत्याचार करने वाला बताया जाता है। इसके अलावा महिला छेड़छाड से लेकर दहेज और घरेलू हिंसाओं में अक्सर कानून महिला का पक्ष लेता दिख जाता है। किसे याद नहीं होगा पिछले साल अक्टूबर में मी-टू अभियान की शुरुआत हुई थी जिसमें महिलाओं ने अपने कार्यस्थलों पर अपने साथ होने वाले यौन उत्पीड़न के मामलों के खिलाफ आवाज उठाई थी। जिसकी चपेट में देश के एक मंत्री से लेकर अनेकों बड़ी कम्पनियों के बड़े अधिकारियों से लेकर नेताओं और अभिनेताओं पर आरोप लगे थे। कुछ पर ताजा आरोप थे तो कुछ के दशकों पुराने मामले सामने निकलकर आये थे।

इन मामलों को उठाने के लिए सोशल मीडिया को एक हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया गया था। जहां महिलाओं ने अपने साथ यौन उत्पीड़न करने वाले व्यक्ति को टैग करते हुए अपने साथ हुए दुर्व्यवहार के बारे में बताया था। इसमें उत्तराखंड प्रदेश पार्टी महामंत्री संजय कुमार, तत्कालीन सरकार में मंत्री एम जे अकबर के अलावा सिने जगत से नाना पाटेकर, विकास बहल, उत्सव चक्रवर्ती, आलोक नाथ और सुभाष घई समेत अनेकों लोगों पर आरोप लगे थे। हालाँकि इससे पहले भारत में साल 2017 में एक लॉ की छात्रा ने एक लिस्ट फेसबुक पर साझा की थी जिसमें 50 प्रोफेसरों पर उत्पीड़न का आरोप लगाया गया था। इस लिस्ट में ज्यादातर प्रोफेसरों के नाम का जिक्र किया गया था।

अब इसी तर्ज पर 18 मई को दिल्ली के इंडिया गेट पर पुरुषों के अधिकारों के लिए काम करने वाले कुछ संगठनों ने एक शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन किया। इस अभियान का नाम मेन-टू रखा गया है इसमें शामिल सभी पुरुषों के हाथों में तख्तियां थी जिसमें पुरुषों के साथ होने वाले उत्पीड़न, उन पर लगने वाले झूठे आरोपों के निदान और पुरुष आयोग बनाने की मांग की हैं। ये लोग कह रहे है कि हमारी लड़ाई उन कानूनों के खिलाफ है, जिनमें एकतरफा सिर्फ महिलाओं की बात को महत्त्व दिया जाता है और महिलाएं इन कानूनों का दुरुपयोग कर रही हैं। जैसे छेड़छाड, रेप और दहेज जैसे कानूनों का अपने निजी फायदे के लिए इस्तेमाल होता है। इन मामलों में फंसने के बाद न सिर्फ समाज में पुरुष के सम्मान को चोट पहुंचती हैं बल्कि कई सालों की कानूनी लड़ाई में वो मानसिक पीड़ा से भी गुजरता है। अगर वो निर्दोष साबित होता है तो उसके समय, पैसे और मानहानि की भरपाई नहीं हो सकती।

.....छेड़छाड, रेप और दहेज जैसे कानूनों का अपने निजी फायदे के लिए इस्तेमाल होता है। इन मामलों में फंसने के बाद न सिर्फ समाज में पुरुष के सम्मान को चोट पहुंचती हैं बल्कि कई सालों की कानूनी लड़ाई में वो मानसिक पीड़ा से भी गुजरता है। अगर वो निर्दोष साबित होता है तो उसके समय, पैसे और मानहानि की भरपाई नहीं हो सकती।.....

अक्सर देखने में भी आता है कि घरेलू झगड़ों को बढ़ा-चढ़ा कर अपराध बना दिया जाता है। कई मामलों में पड़ोसी के साथ झगड़ा नाली को लेकर शुरू होता है और अंत में रेप के मुकदमे में तब्दील हो जाता है। तो कई मामलों में ऐसा भी देखा गया जब एक व्यकित अपनी उधारी के पैसे मांगने गया था तो उसे रेप जैसे घिनौने अपराध में फंसा दिया गया। इसके अलावा धन व जमीन जायदाद हड़पने, रंजिश निकालने व परेशान करने के लिए झूठे केस बनाए जाते हैं। कोर्ट कचहरियों में मुकदमों की भरमार है।

इसीको ध्यान में रखते हुए पिछले साल 2 अक्टूबर के दिन राजधानी दिल्ली के जंतर-मंतर पर पुरुष आयोग की मांग करने की योजना और इससे पहले 23 सितंबर को कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में राष्ट्रीय पुरुष आयोग की मांग को लेकर पहली कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई थी। क्योंकि बहुत सी औरतें खुद मरने व झूठे केस में पति व उस के पूरे परिवार को फंसाने की धमकी देती रहती हैं। अदालतों में दहेज, मारपीट, छेड़खानी, बलात्कार व चेहरे पर तेजाब फेंकने जैसे बहुत से मामले झूठे साबित हो चुके हैं। बहुत सी औरतें अपने हक में बने कानून का बहुत ज्यादा इस्तेमाल करती हैं। इसमें इन्सान का वक्त और पैसा तो बर्बाद होता ही है साथ ही मामला मीड़िया में उछलने से उसके सामाजिक सम्मान में क्षति भी होती है। कई लोग तो इस ब्लैकमेलिंग से तंग आकर कर आत्महत्या तक कर लेते हैं। न जाने ऐसी कितनी खबरें अखबारों में आये दिन आती रहती है कि पत्नी से तंग आ कर युवक ने आत्महत्या की।

एक रिपोर्ट के मुताबिक, अप्रैल 2013 से जुलाई 2014 के बीच अकेले दिल्ली में रेप के 2,753 मामले दर्ज हुए थे। इन में 1,464 मामले झूठे पाए गए थे। जाहिर है कि उन औरतों की कमी नहीं है जो अपने किसी भी उद्देश्य के लिए रेप का आरोप लगाने से नहीं चूकतीं। हमारा समाज यह मानने के लिए सदा तैयार रहता है कि आरोप में कुछ न कुछ सच्चाई होगी। पिछले कुछ दिनों पहले एक खबर ने सबको चौंका दिया था कि मेरठ में एक औरत ने सरकारी अस्पताल में अपनी डाक्टरी जांच कराकर सर्टिफिकेट बनवाया व थाने जाकर शिकायत दर्ज करा दी। पुलिस ने उस के पति को उठाकर जेल में डाल दिया। बाद में जब मामला खुला तो पाया कि पत्नी के गैरमर्द से नाजायज संबंध थे। पति मना करता था। इस बात पर पत्नी ने यह ड्रामा रचा व फर्जी मैडिकल सर्टिफिकेट बनवाकर पति को अंदर करा दिया था।

इसके अलावा देखा जाये तो साल 2015 में कुल 91528 पुरुषों ने आत्महत्या की थी इनमें 24043 पुरुषों की आत्महत्या की वजह पारिवारिक मसले रहे। लेकिन इनमें 2497 पुरुषों ने शादीशुदा जीवन में या पत्नी से कलह की वजह से अपनी जान ली। अक्सर यह समझा जाता है कि पुरुष ताकतवर होते हैं। उन का शोषण नहीं हो सकता। औरत उन के साथ क्रूरता नहीं कर सकती। इस कारण उन्हें थाने या कचहरी से जल्दी कोई राहत नहीं मिलती है। दूसरा आजकल या प्रभावशाली अमीर लोगों पर नाबालिग लड़की से रेप का आरोप लगवाकर फंसाया जाता है। फिर उसे पॉक्सो में फंसवाने की धमकी दी जाती है। बाद में समझौते के नाम पर मोटी रकम ऐंठी जाती है। हालांकि झूठे आरोप लगाना कानूनन जुर्म है लेकिन इस से कोई नहीं डरता। दरअसल, न कहीं लिखा है, न कोई बताता है कि झूठा केस करने पर कड़ी सजा मिलेगी। इन कमजोरियों का फायदा उठाने के लिए झूठी शिकायतें व मुकदमेबाजी पर जब तक कोई लगाम नहीं लगती, तब तक बेगुनाहों की जिंदगी तबाह होती रहेगी। इस कारण समाज के लोगों को सच के साथ खड़ा होना चाहिए तथा मीडिया और कानून को भी जाँच के बाद ही किसी नतीजे पर पहुंचना चाहिए पीड़ित स्त्री हो या पुरुष बराबर न्याय मिलना चाहिए।

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

गोलियों की दनादन में प्राचार्य भगवानदास जी

जब भारत छोड़ो आन्दोलन चल रहा था तब वे डी. ए. वी. कॉलेज लाहौर में आर्ययुवक समाज के प्रधान थे। उन दिनों आर्ययुवक स्वतन्त्रता-संग्राम में बहुत सक्रिय थे। सरकार की दमन नीति के कारण कई परिवारों को बड़ा पिसना पड़ा। लाला जगत नारायणजी का परिवार उनमें से एक था। तब लाला जगत नारायण का परिवार दृढ़ आर्यसमाजी परिवार माना जाता था। प्रसंगवश यहाँ लिख दूँ कि जब मुझे गुरुद्वारा सिगरेट केस में यातनाएँ दी जा रही थीं। तब लालाजी की माता लालदेवीजी ने अपने बेटे से कहा, मैं तब तक भोजन नहीं करूँगी जब तक 'जिज्ञासु' का कुछ पता न चले। लालाजी ने वृद्धा माता को बताया कि वह जालन्धर पुलिस के पास नहीं, अमृतसर में है। माता लालदेवी हमारे ही नगर की थीं।

प्रो. भगवानदासजी ने तब ऐसे परिवारों की सहायता के लिए एक गुप्त संस्था बनाई। सेठ राम नारायणजी विरमानी लायलपुर, बाबा गुरुमुखसिंहजी तथा एक और आर्यसेठ (मैं नाम भूल गया) इस संस्था को आर्थिक सहायता देते थे। यह गुप्त संस्था दमन करने वाले अधिकारियों का स्थानान्तरण करने के लिए भी अपने ढंग से चक्र चलाती। अंग्रेज सरकार को पता लग गया कि प्रो. भगवान दास डी.ए.वी. कॉलेज में एक सरकार विरोधी संस्था का संचालन कर रहे हैं।

एक दिन पुलिस कॉलेज में घुसकर सीधे उस कक्ष में गई, जहाँ भगवानदासजी क्लास लिया करते थे। संयोग ऐसा हुआ कि उस समय एक और प्रोफेसर की आकृति प्रो. भगवानदास से मिलती थी। पुलिस ने आव देखा, न ताव, उस प्रोफेसर पर लाठियाँ बरसानी आरम्भ कर दीं। वह समझ गया कि भगवानदास समझकर मुझे मारा जा रहा है। वह जोर-जोर से चिल्लाया कि मैं भगवानदास नहीं हूँ। पुलिस ने जो करना था सो कर दिया। भगवानदास लहुलुहान होने से बच गये। यह घटना मुझे सफीदों (जिला जींद हरियाणा) के एक डॉक्टर ने बरनाला में सुनाई थी। प्रिंसिपल भगवानदासजी ने भी इसकी पुष्टि की थी। मैं उस लहुलुहान होने वाले प्राध्यापक का नाम भूल गया। दैनिक प्रताप आदि में मैंने तभी लेखों में यह घटना दी थी। आचार्य सत्यप्रियजी की पुस्तक में भी यह छपी है। - *क्रमश:*

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

हाल ही में महाराष्ट्र में घटित घटना के सम्बन्ध में लेख

जातिवाद का कोढ़ !

.....हम कितना भी आधुनिक होने का दम्भ भरें लेकिन आज भी हमारे देश में विवाह और वोट अपनी ही जाति में देने की सोच बनी हुई है। यहां समस्या और भी है, मान लो एक लड़की x जाति की है और एक लड़का जो y जाति से है। दोनों ने जाति बंधन तोड़ते हुए शादी कर ली। यहां तक सही है लेकिन इसके बाद जो बच्चे पैदा होंगे वे किस जाति के होंगे? उन्हें स्कूलों और सरकारी सामाजिक भाषा में माता या पिता आखिर किसकी जाति का कहा जा जायेगा? क्या जाति खत्म हो गयी?.. .... जब कोई हजारों साल पुरानी परम्परा टूटती है तो वह बिना किसी आहट या शोर के नहीं टूटती। अभी तो खाई बहुत गहरी थी ही लेकिन जिस तरह जातिवादी संगठन और जातिवादी पार्टियां हर रोज जन्म लेकर समाज में द्वेष पैदा कर रही हैं, क्या आपको लगता है ये जातिवाद खत्म होने देंगे?.....

खबर है कि महाराष्ट्र में अलग-अलग जाति के एक लड़के और एक लड़की ने आपस में विवाह रचाया था पर इससे नाराज लड़की के परिवारवालों ने अब ज्ञादीशुदा दंपत्ति को एक घर में बंद करके आग के हवाले कर दिया। इस घटना में लड़की की जलकर मौत हो गई। मगर उनकी जातियां हमेशा जीवित रहेंगी। अब इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि भारत में धर्म से ऊपर जाति है। जाति के साथ भेदभाव खड़ा है और भेदभाव के साथ ऊंच-नीच खड़ी है। यही कारण है कि हमें ऐसी खबरें पढ़ने को मिलती हैं। असल में इंसान के साथ जाति वह ठप्पा है, जिसे इंसान 'ना' चाहते हुए भी लेकर पैदा होता है और यह ठप्पा मरकर भी पीछा नहीं छोड़ता। यह भी कह सकते हैं कि जाति वह मीठा गुड है, जिसे अनेक लोग चुपचाप मुंह में लेकर इसका स्वाद लेते हैं तो अनेक लोगों के लिए जाति एक भुने हुए आलू की तरह भी हैं जो कई बार हलक में चिपक जाती है।

जब लोग जातिवाद की बात करते हैं तो कई चीजें कोसने को भी मिल जाती हैं। कई प्राचीन ग्रंथों को लेकर चार गाली दी जाती हैं। अंतर जातीय विवाह कर लिया तो हम समझते हैं कि हमने जातिवाद खत्म कर दिया? लेकिन जब एक अंतर जातीय विवाह होता है तो आप क्या समझते हैं कि हमारा समाज उसको एकदम से स्वीकार कर लेता है, नहीं ग्रामीण आंचलों में आज भी दोनों परिवारों को ताने मिलते हैं, उलहाने मिलते हैं, - 'जा तू मत बोल, अगर इतना बढ़िया होता तो लड़की फलानी जाति के लड़के के साथ न भागती?' ऐसा ही कुछ हाल लड़के वालों के साथ होता है - 'जा तू समाज में बोलने लायक नहीं है, अगर तेरा परिवार इतना अच्छा होता तो लड़की गैर जात से न लानी पड़ती।'

इस तरह के तानों से ही कई परिवार ऐसे कदम उठाने को मजबूर होने लगते हैं जो कि अपराध है, जैसा कि महाराष्ट्र में सुनने को मिला। हम कितना भी आधुनिक होने का दम्भ भरें लेकिन आज भी हमारे देश में विवाह और वोट अपनी ही जाति में देने की सोच बनी हुई है। यहां समस्या और भी है, मान लो एक लड़की x जाति की है और एक लड़का जो Y जाति से है। दोनों ने जाति बंधन तोड़ते हुए शादी कर ली। यहां तक सही है लेकिन इसके बाद जो बच्चे पैदा होंगे वे किस जाति के होंगे? उन्हें स्कूलों और सरकारी सामाजिक भाषा में माता या पिता आखिर किसकी जाति का कहा जा जायेगा? क्या जाति खत्म हो गयी?

मेरा कहने का अर्थ यह है कि पहली बात तो भारतीयों की नसों में जाति बहुत गहराई तक बसी हुई है, इसे इतनी जल्दी खत्म नहीं किया जा सकता है। जब कोई हजारों साल पुरानी परम्परा टूटती है तो वह बिना किसी आहट या शोर के नहीं टूटती। अभी तो खाई बहुत गहरी थी ही लेकिन जिस तरह जातिवादी संगठन और जातिवादी पार्टियां हर रोज जन्म लेकर समाज में द्वेष पैदा कर रही हैं, क्या आपको लगता है ये जातिवाद खत्म होने देंगे?

हालाँकि विभिन्नताओं में कोई बुराई नहीं है, समाज में विभिन्नता होती भी हैं मगर हम हर इन विभिन्नताओं को भेदभाव में बदलने की कोशिश करते हैं। इसी का नतीजा है कि भारतीय वर्ण व्यवस्था जाति में बदली और जाति व्यवस्था एक खराब व्यवस्था बन गई है। इसे काम के आधार पर ऊंचा नीचा तक बना डाला जबकि एक समय प्रशिक्षण केंद्र नहीं थे।

जब कोई प्रशिक्षण केंद्र नहीं था, तब आपका परिवार ही आपको प्रशिक्षण देने का इकलौता जरिया था। तब जो काम बाप करता था, वही बेटा करने लगता था। समय के साथ लोगों ने इस पारिवारिक कौशल को जाति बना डाला और कुछ लोगों ने इसमें भेदभाव खड़ा कर दिया। इस कड़ी में सबसे पहला कदम यह होना चाहिए कि आज हमें जातियों को कोसना छोड़ना होगा कि किसने क्या किया, किसने कितना शोषण किया। ये अतीत के अध्याय हो सकते हैं, भविष्य की रूपरेखा बिलकुल नहीं। बस जातियों से ऊंच-नीच का भेदभाव मिट गया तो समझो हमने पहली जंग जीत ली। इसके बाद खूब विवाह करो शायद कोई परेशानी सामने नहीं आएगी। वरना कोसते रहो कथित नीचे वर्ग के लोग कथित उच्च वर्ग को, अपनी सभी परेशानियों का कारण उन्हें बताते रहो और कथित उच्च वर्ग भी कभी आरक्षण के नाम पर तो कभी किसी और बहाने से दूसरे वर्ग को नीचा दिखाने के लिए कोसते रहो, कुछ हल नहीं होगा। अंत में बस यही है कि हमें वर्षों से यह तो सिखाया गया कि सब धर्म बराबर होते हैं, काश हमें यह भी सिखाया गया होता कि सभी जातियां भी बराबर होती हैं तो आज हमारा समाज ऐसी खबरें पैदा 'न' करता।

- राजीव चौधरी

प्रथम पृष्ठ का शेष

विद्यालयों में बच्चों को वैदिक संस्कार देने .....

परिचित करवाना, जिससे वे अच्छे मनुष्य भी बनें।

श्री विनय आर्य जी ने गोष्ठी करने का कारण व रूपरेखा बताते हुए कहा कि शिक्षा तो अनेक विद्यालयों में दी जा रही है किन्तु हम चाहते हैं कि आर्य विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों में कुछ विशेष गुण हों, उन्हें विशेष जानकारियां दी जाएं जिससे उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण हो। इसलिए आर्य विद्या परिषद की गत बैठक में यह निर्णय लिया गया था कि सभी विद्यालयों में कुछ विशेष चुनी हुई बातों को पहुंचाने का प्रयास करेंगे जिससे उनके व्यक्तित्व में निखार भी आएगा और अच्छे नागरिक साबित होंगे।

इसी रूप में सात बिंदुओं का निर्माण किया गया है। इसके पूर्व भी तीन मीटिंग हुई जिसमें विचार किया गया कि बचपन से लेकर जब तक बच्चा हमारे विद्यालय में पढ़ता है तब तक के कार्यकाल में ये बिंदु उनमें समाहित हो जाने चाहिए। वैचारिक परिवर्तन जो बच्चा हमारे विद्यालय में पांच साल, आठ साल या दस-बारह साल पढ़ता है उसे अपने परिवार, देश, समाज के प्रति अपने जिम्मेदारी का पता होना चाहिए। जैसे नशा, अपराध करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। महिलाओं के प्रति अपराध बढ़ रहे हैं। इन सभी मुद्दों पर विचार करना होगा। द्वितीय चरण में आपके विचार होंगे।

इस के बाद सुरेन्द्र रैली जी ने ईश्वर की सत्ता पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि ईश्वर एक है वह हर स्थान पर रहता है। निराकार है। विदेशों में भी इसकी खोज की जा रही है कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं, कहां जाऊंगा?

ईश्वर का निज नाम ओ३म् है। बाकी सभी नाम गुणवाचक और विशेषणवाचक है। ओ३म् की व्याख्या करते हुए बताया कि यह तीन वर्णों से मिल कर बनता है - अ,उ,म्। इस तरह बड़े ही सुन्दर ढंग से ईश्वर की व्याख्या की।

पद्मभूषण आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी ने सबको आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप सदा खुश रहें। कोई भी काम मेहनत, ईमानदारी से करोगे तो सफलता जरूर मिलेगी।

महामन्त्री विनय आर्य जी ने आचार्य वागीश जी का धन्यवाद करते हुए कहा कि हम जो भी कर्म करते हैं उसका फल अवश्य भोगना पड़ता है। उन्होंने कहानी के माध्यम से बताया कि ईश्वर सब जगह है और हमें देखता है। लोग जादू टोना टोटका जैसे अंधविश्वास में पड़ कर अपना धन व समय का नाश करते हैं। बिना पढ़े पास नहीं हो सकते।

दूसरे सत्र में रैली जी ने बताया कि नमस्ते हमारा वैदिक अभिवादन है। नमस्ते का अर्थ, नमस्ते क्यों व कैसे करनी चाहिए। विस्तार से बताया और कहा कि बच्चों को इस की आदत डालनी होगी।

इस के बाद इस गोष्ठी में अध्यापकों ने भी अपनी समस्याएं व समाधान भी बताया। विनय जी ने कहा कि विद्यालयों में बच्चों और टीचर्स की कार्यशाला आयोजित की जाएगी।

डॉ. उमाशशि दुर्गा जी ने सबका धन्यवाद किया ।

- श्रीमती वीना आर्या, संयोजिका

ओ३म्
thearyasamaj.org
एक करोड़ उनसठ लाख+
लोगों ने अब तक देखा
आर्यसमाज YouTube चैनल
आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और
अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।
यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना
चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।
यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन,
सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड
कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका एवं आर्यसमाज शिकागालैंड के संयुक्त तत्त्वावधान में

29वां आर्य महासम्मेलन, शिकागो: 25-26-27-28 जुलाई, 2019

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका और आर्य समाज शिकागोलैंड की ओर से 29 वें आर्य महासम्मेलन जुलाई 25-28, 2019 को, शिकागो, अमेरिका में आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन का विषय है - वेद की ज्योति द्वारा अपने जीवन का प्रदीपन है। इसके अन्तर्गत वैदिक परिप्रेक्ष्य में विश्व शांति, निरंतर समरसता, नारी सशक्तीकरण के विषय सम्मिलित होंगे।

इस अवसर पर योग एवं ध्यान सत्र, रोचक युवा सत्र, सांस्कृतिक कार्यक्रम, आर्य समाज से संबंधित सम-सामयिक विषयों पर चर्चा, सामाजिक कल्याण सम्बंधित चर्चाओं, और व्यस्कों तथा युवाओं के लिए गतिविधियों को शामिल किया जाएगा, जिससे कि हम सभी अपने भौतिक, नैतिक-आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान के लक्ष्यों की ओर बढ़ते हुए संसार का भी उपकार करते चलें। सम्मेलन में भाग लेने वालों के लिए ऑनलाइन पंजीकरण अनिवार्य है।

भारत से पहुंचने वाले आर्यजनों के लिए विशेष यात्रा का का प्रयास किया जाएगा। जो महनुभाव महासम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक हों वे कृपया अपना विवरण aryasabha@yahoo.com पर भेजें। सम्मेलन के बारे में अधिक जानकारी के लिए www.aryasamaj.com/ams पर लॉगइन करें।

निवेदक

सुरेशचन्द्र आर्य	प्रकाश आर्य	डॉ. सुखदेव सोनी	विश्रुत आर्य	भुवनेश खोसला
प्रधान	मन्त्री	संयोजक	प्रधान	मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा		महासम्मेलन	आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका	

हिन्दी भाषा एवं संस्कृति शिक्षण सत्र

समापन समारोह

सूचना

हिन्दी भाषा एवं संस्कृति प्रेमी सज्जनों को सादर सूचित किया जाता है कि आर्य सत्संग मण्डल, माण्डले के तत्त्वावधान में आयोजित हिन्दी भाषा एवं संस्कृति शिक्षण सत्र (१७ मार्च २०१९/ ३० मई २०१९) का समापन समारोह आगामी दिनांक ३० मई २०१९ गुरुवार को होगा।

अतएव आपसे सादर निवेदन है, इस कार्यक्रम में पधार कर इसे सफल बनावें।

दिनांक - ३० मई २०१९ (गुरुवार)

समय - प्रात: ८:०० से ८:३० बजे तक - सन्ध्या एवं हवन यज्ञ
प्रात: ९:१५ बजे से १२:०० बजे तक - समापन समारोह
मध्याह्न १२:०० बजे से १:३० बजे तक - प्रीतिभोज।

स्थान - श्री गंगाघाट हिन्दू मन्दिर, माण्डले।

सरोज देवी	रोशन कुमार	चिन्तामणि वर्मा
प्रधान	मन्त्री	प्रधानाचार्य
आर्य सत्संग मण्डल,	माण्डले	हिन्दी भाषा एवं संस्कृति शिक्षण सत्र

माता कृष्णा चड्डा सम्मानित

पश्चिमी दिल्ली महिला वेद प्रचार मंडल द्वारा आर्यसमाज कीर्ति नगर नई दिल्ली में मंगलवार 21 अप्रैल को आर्यसमाज स्थापना दिवस धूमधाम से आयोजित किया गया। इस अवसर पर दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने भी पहुंचकर अपना प्रेरक उद्बोधन दिया। इस अवसर पर महिला वेद प्रचार मंडल की वर्तमान संरक्षिका, पूर्व प्रधान एवं स्थापना महामन्त्री के रूप में अपनी सेवाएं देने वाली माता कृष्णा चड्डा जी को पश्चिमी दिल्ली महिला वेद प्रचार मंडल की प्रधाना श्रीमती सुनीता पासी, महामन्त्री श्रीमती वनिता जी प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीममी प्रकाश कथूरिया,एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने पीतवस्त्र, शाल एवं ओ३म् पेडल पहनाकर सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि माता कृष्णा चड्डा जी महिला मंडल की 8 वर्षों तक महामन्त्री एवं 10 वर्षों तक प्रधाना रहीं। - ***मन्त्री***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौन्धा देहरादून द्वारा आयोजित

योग-साधना एवं स्वाध्याय-शिविर

दिनांक : 27 मई से 31 मई 2019 तक

स्थान : श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौन्धा, देहरादून (उ.ख.)

'स्वाध्यायान्मा प्रमद:'(तैत्तिरीयोपनिषद्-9/11) अर्थात् स्वाध्याय से प्रमाद (आलस्य) नहीं करना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने प्राचीन आर्ष परम्परा को उद्धृत करते हुए सभी आश्रमों में ईश्वरोपासना एवं स्वाध्याय की परम्परा को अक्षुण्य बनाये रखने का निर्देश किया है। वर्तमान में स्वाध्याय व ईश्वरोपासना से विमुख होने से अनेक प्रकार की भ्रांतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। उपनिषद् के निर्देश का अनुपालन करते हुए दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा एवं श्रीमद् दयानन्दार्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 31 मई, 1, 2 जून 2019 को आयोजित होने वाले श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा देहरादून के 19 वें स्थापना दिवस एवं वार्षिकमहोत्सव के शुभअवसर पर योग-साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन 27 मई से 31 मई 2019 तक किया जा रहा है। इस शिविर में पूज्य स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के मार्गदर्शन में योग-साधना का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा स्वाध्याय शिविर के आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री जी (मुम्बई) होंगे। पिछले वर्षों में सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के प्रकरण का अध्ययन किया गया। इस सत्र में महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रणीत पंचमहायज्ञविधि का अध्ययन कराया जायेगा। शिविर में शुद्ध-मन्त्रोच्चारण, मन्त्रों के अर्थ, पंचमहायज्ञविधि की अनिवार्यता आदि विषयों पर चर्चा-परिचर्चा की जायेगी।

आप सपरिवार इष्ट मित्रों के साथ अधिक से अधिक संख्या में स्वाध्याय एवं योग-साधना शिविर में सादर आमन्त्रित हैं। शिविर में भाग लेकर आत्मकल्याण के उपासक बनें। आपके निवास, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क रहेगी।

नोट : शिविरार्थियों को शिविर-दिनचर्या में सहभागी बनना आवश्यक है। शिविर में कॉपी, पेन,सम्भव हो तो पंचमहायज्ञविधि की पुस्तक तथा ऋतु अनुसार ओढ़ने के लिए चादर साथ लायें।

मार्गसंकेत

देहरादून रेलवे स्टेशन एवं बसस्थानक (ISBT) से प्रेमनगर पहुँचकर पौन्धा जाने वाले मैजिक से गुरुकुल पौन्धा पहुँचा जा सकता है। जिन सज्जनों की सूचना पूर्व में ही होगी तो उन्हें रेलवे स्टेशन अथवा बसस्थानक से लाने की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से की गई है।

सम्पर्क सूत्र

श्री सुखवीर आर्य (संयोजक एवं मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) - 9350502175

गुरुकुलपौन्धा - 9411106104, 7900665649, 9411310530, 7017579268, 8810005096

वेदविद्या, संस्कृतभाषा के प्रचार-प्रसार, ऋषि लंगर, गो-रक्षार्थ तथा ब्रह्मचारियों के निर्माण में अन्न-धन का सहयोग कर पुण्य के भागी बनें।

19 वें स्थापना दिवस एवं वार्षिकमहोत्सव दिनांक 31 मई, 1, 2 जून 2019 को आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

निवेदक

श्री धर्मपाल आर्य	श्री सुखवीर सिंह आर्य	स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
प्रधान	संयोजक एवं मन्त्री	संचालक एवं संस्थापक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली प्रदेश		गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा - हम सब का दायित्व

इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मानवमात्र की सहायतार्थ तैयार किए गए मोबाइल एप्प

Why do we hate anyone?

Love and hatred are two such emotional feelings in the world from whose clutches' human can never be freed. From both these states of mind, one has to go through life many times. If we talk about love- the topic which has been written and read most in the world, but only a little attention has been paid to understand hatred. After all, what is the hatred and when does this feeling come up in the mind, this question definitely strikes our mind many times. By the way, the end of love is hating, but there is another reason also that we often hate people who are different from us.

In it, the theory of fear also works, although Goswami Tulsidas Das has written that no fear -no love! But my argument is quite the opposite. Often the people to whom we are afraid of, we start hating. According to practical researchers, people who hate others, they are afraid of themselves, i.e. according to one theory that I am not terrible but you are.

In fact, we develop a certain methodology in our life, we think in our confined boundaries, see and understand the world in those boundaries. It grows and builds up within our mind, brain and become an assumption. When like-minded people meet us, then they give strength to this perception and we end up becoming happily self-cantered. It can also be called love and friendship and even affection. But when any outsider attacks our belief, then the mind starts getting distracted because since we have developed a belief with a great hardship so we can not tolerate the fragmentation of that belief or assumption.

It can be understood this in such a way that when we find the unacceptable part of ourselves, then we attack others to avoid the danger. As long as we have the word to give in return, we keep attacking with words but when the word ends, the attack becomes physically violence. History has also existed many such examples, such as the incidence of spitting on the Mahatma Buddha or the incidence of poisoning Swami Dayanand Saraswati and Sukrat, etc. All these people attacked people's perceptions, in return, people attacked them to save their perception.

Hatred is-an attempt to disturb ourselves through feelings such as helplessness, powerlessness, injustice and a sense of shame. The second- hatred is a part of a feeling that ranges from our family to history and part of our cultural and political history. We live in war culture, which promotes violence, in which there is strong competition, it is also understood as a way of life. We are being taught to hate the enemy which means that if there is no one like us, different from our ideology, apart from the boundaries then that person is assumed to be the recipient character of hatred.

We are all born with the power of aggression and compassion. What trends we finally embrace, it depends on us. There is a key to overcome hatred. Attention: Whenever there is a sense of hatred towards someone, we should observe that why is there a sense of hatred towards him/her? Is there any kind of fear or are we lesser than his/her capacity? Is there a sense of expectation or some other reason for this discussion in mind, and after this one has to discuss with the person. Secondly, students should be taught and educated on these issues at home, in schools, and at the community, a level that how to deal with feelings of hate, jealousy or even violence.

We have to understand that these are practical expressions and when we are close to them then we take part in the stress out of them. Because emotions affect every moment of life and have ultimately created a person, family, society, and nation or deteriorated it. It would be better for us to understand the concepts of emotions likewise the subjects of mathematics or science etc such that with the understanding the topics, we can explain that why we ultimately hate and how it can be ended.

- ***Vinay Arya, Gen. Sec.***

पृष्ठ 2 का शेष

नजरिया राजनीति और ....

मगर किसी पत्रकार को, किसी लेखक को देश में कोई असहिषुणता नजर नहीं आई। क्यों नहीं मार्च निकाला गया? क्यों किसी ने कोई पुरस्कार वापिस नहीं किया?

जुनैद की हत्या का मामला हो या पहलू खान का इस तरह के अनेकों मामले झूठे पाए जाते हैं और खबर पर एक छोटा सा डिस्क्लेमर डालकर न्यूज एजेन्सी अपना बचाव कर लेती है। जैसे ही खबर निकलती है सारे गैंग ऐक्टिव हो जाते हैं। बड़ी बिंदी गैंग, ब्रिगेड असहिष्णुता ब्रिगेड, दिल्ली के जन्तर-मंतर पर नोट इज माय नेम वाले वामपंथी, पोस्टर बैनर के साथ आप हिंदुओं का चीरहरण शुरु कर देते हैं। आप डिफेन्सिव मोड़ पर चले जाते हैं। या फिर उनके साथ ही तख्ती लेकर खड़े दिखाई देते हैं। वहीं इसके विपरीत यदि हत्या किसी हिंदू की होती है तो बचाव में कोई नहीं आता है। न विरोध में कोई गैंग आता है। हाँ यदि उसके नाम के सामने दलित चिपका दिया जाए तो जरूर कुछ कथित सामाजिक कार्यकर्ता गिद्ध बनकर लाशें नोचने पहुँच जाएँगे।

अब आप सोचेंगे कि इससे क्या फर्क पड़ता है? तो मैं आपको बता दूँ इससे इतना फर्क पड़ता है कि विदेशों में रहने वाले लाखों हिन्दुओं को शक की नजरों से देखा जाता है। अगर पहलू-अखलाक पर बात होती है तो नारंग और चंदन गुप्ता पर भी हो। अपराध बोध से बाहर निकलिये हरएक हत्या पर बात कीजिए। आरोपी का धर्म देखकर ही आप कुछ बोलते हैं। आखिर इन हत्यारों से इतनी हमदर्दी क्यों? इसलिए खुलकर बोलिए कि ध्रुव त्यागी की सिर्फ हत्या नहीं बल्कि मॉब लिंचिंग भी थी क्योंकि उन्हें 11 मजहबी उन्मादियों ने घेर कर मारा जिसमें 4 महिलाएं भी शामिल थीं।

- ***सम्पादक***

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

(नैक द्वारा "ए" ग्रेड प्राप्त यू.जी.सी. एक्ट 1956 के सेक्शन 3 के अन्तर्गत समविश्वविद्यालय)

प्रवेश सूचना-II (2019-20)

निम्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र आमन्त्रित किये जाते हैं:-

पाठ्यक्रम	प्रवेश प्रक्रिया	आवेदन शुल्क*	अंतिम तिथि
पी-एच.डी.	शोध प्रवेश परीक्षा (RET) एवं सीधे प्रवेश	₹1200/- (प्रवेश परीक्षा सहित)	10-06-2019
बी.एस-सी./ बी.एस-सी. ऑनर्स (कम्प्यूटेशनल साइंस)	प्रवेश परीक्षा के आधार पर	₹1000/- (प्रवेश परीक्षा सहित)	10-06-2019
एम.बी.ए./ एम.बी.ए.(बी.एफ.)/ एम.बी.ए.(बी.ई.)	CAT/MAT/CMAT/GMAT/GRE के स्कोर के आधार पर	₹1000/-	18-06-2019 (रिक्त सीटों के लिए अन्य तिथियाँ वेबसाइट पर उपलब्ध हैं)
बी.बी.ए.	अर्हता परीक्षा की शैक्षणिक मेरिट के आधार पर		
बी.ए./अलंकार(बी.ए. ऑनर्स)/ एम.ए./पी.जी. डिप्लोमा	प्रवेश परीक्षा के आधार पर	₹1000/- (प्रवेश परीक्षा सहित)	30-06-2019
बी.टैक.	JEE मेन्स के AIR के आधार पर	₹ 300/-	वेबसाइट पर देखें
बी.टैक. द्वितीय वर्ष (लेटरल एंट्री)	प्रवेश परीक्षा के आधार पर	₹ 800/- (प्रवेश परीक्षा सहित)	30-06-2019
एम.एस-सी.*/एम.सी.ए.*/एम.पी.एड.*/ बी.पी.एड.*/बी.फार्म.*	प्रवेश परीक्षा के आधार पर	₹1000/- (प्रवेश परीक्षा सहित)	25-05-2019 #

*आवेदन शुल्क ऑनलाइन /नकद अथवा कुलसचिव, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पक्ष में देय डिमाण्ड ड्राफ्ट द्वारा
• आवेदन पत्र व विवरणिका निर्धारित शुल्क जमा कर कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं।
• ऑनलाइन/ वेबसाइट से डाऊनलोड किये गये आवेदन पत्र भी निर्धारित शुल्क के साथ जमा किये जा सकते हैं।
• न्यूनतम अर्हता, परीक्षा केन्द्र, परीक्षा तिथियाँ, प्रवेश प्रक्रिया एवं अन्य विस्तृत जानकारियाँ वेबसाइट/ विवरण पत्रिका में उपलब्ध हैं।
#नोट: पूर्व में विज्ञापित प्रवेश सूचना -I (2019-20) के सन्दर्भ में एम.एस-सी /एम.सी.ए /एम.पी.एड्. /बी.पी.एड्. /बी.फार्म. पाठ्यक्रमों के लिए आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि दि० 25 मई 2019 तक बढ़ाई जाती है।

वेबसाइट: www.gkv.ac.in

कुलसचिव

@gkvsocial @gkvharidwar #gkv_hrd

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार प्रकल्प के अन्तर्गत
देश-विदेश में वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु
प्रचारकों की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की ओर से देश-विदेश में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की शृंखला आरम्भ की जा रही है, जिसके लिए सुयोग्य उम्मीदवारों के आवेदन आमन्त्रित हैं। कुल पद : **भारत हेतु 20** तथा **विदेशों हेतु 5**। इच्छुक अभ्यर्थी के लिए वांछित योग्यताएं निम्न प्रकार हैं -

1. आर्य वीर दल का प्रशिक्षण प्राप्त हो। 2. गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो। 3 यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में निपुण हो। 4. आर्यसमाज के प्रचार की हार्दिक इच्छा रखता हो। 5. युवा जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो।

चयनित अभ्यर्थी की प्रथम नियुक्ति भारत के किसी भी राज्य में तथा विशिष्ट अंग्रेजी भाषा ज्ञान और कार्य के अनुभव के उपरान्त भारत से बाहर किसी भी देश में की जाएगी। पूर्ण योग्यता होने की दृष्टि में सीधे विदेशों में नियुक्ति की जा सकती है। सम्मानित मानदेय के साथ-साथ वाहन व्यय, मोबाईल व्यय, स्वास्थ्य बीमा, आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य साधने की दृढ़ इच्छा रखने वाले युवा महानुभाव अपना विस्तृत आवेदन पत्र- विश्व में आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता और उनकी महान इच्छा, पारिवारिक स्थिति एवं परिचय, भाषा ज्ञान, कम्प्यूटर ज्ञान, शैक्षिक योग्यता, पासपोर्ट नं., मोबाईल एवं ईमेल के साथ तत्काल रूप से **'संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति'** के नाम - **'15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें।

- ***संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति***

वेदान्त दर्शन एवं छान्दोग्य उपनिषद कक्षाएँ

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली में वेदान्त दर्शन एवं छान्दोग्य उपनिषद् की कक्षाओं का आयोजन शनिवार 1 जून, 2019 से किया जा रहा है। कक्षाओं का संचालन डॉ. देव कृष्ण दाश (उपनिदेशक, वेद संस्थान) द्वारा किया जाएगा। जो महानुभाव इन कक्षाओं का लाभ लेने के इच्छुक हों वे अपना नाम श्री राजीव चौधरी जी (9810014097), श्री अजय कुमार जी (011-46678389) अथवा श्री सुरेन्द्र प्रताप जी से (9953782813) को लिखवाकर पंजीकरण करा लेवें।

वेदान्त दर्शन कक्षा
प्रत्येक मास के प्रथम शनिवार
सायं 5 से 7:15 बजे

छान्दोग्य उपनिषद कक्षा
प्रत्येक मास के चतुर्थ शनिवार
सायं 5 से 7:15 बजे

इन कक्षाओं में जिन प्रतिभागियों की उपस्थिति कम से कम 75% रहेगी रहेगी उन्हें वेद संस्थान की ओर से प्रमाण-पत्रों से पुरस्कृत किया जाएगा।

- राजेन्द्र कुमार वर्मा, मन्त्री

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का
चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

24 मई से 2 जून 2019 गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद (हरि.)

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का ग्रीष्मकालीन वार्षिक चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर 24 मई से 2 जून, 2019 तक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद (हरियाणा) में आयोजित किया जा रहा है। समापन समारोह 2 जून, 2019 को आयोजित होगा। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर आर्यवीरों को आशीर्वाद प्रदान करके उत्साहवर्धन करें। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-

बृहस्पति आर्य, महामन्त्री, 9990232164

आर्य वीर दल हरियाणा प्रदेश द्वारा विभिन्न प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीर दल

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ
26 मई से 2 जून, 2019
आर्यसमाज मंदिर सेक्टर 4 गुडगांव
2 जून से 9 जून, 2019
आर्य वीर दल रेवाड़ी (जाडरा)
2 जून से 9 जून, 2019
गुरुकुल कुरुक्षेत्र
1 जून से 5 जून, 2019
इंडियन मॉडल स्कूल सोनीपत
2 जून से 9 जून, 2019
दयानंद मठ रोहतक
3 जून से 9 जून, 2019
गुरुकुल जूआं
3 जून से 9 जून, 2019
आर्य वीर दल पानीपत
3 जून से 9 जून, 2019
आर्य वीर दल हांसी
3 जून से 9 जून, 2019
आर्य वीर दल भिवानी (बाढ़ड़ा)
16 से 23 जून, 2019
आर्य वीर दल मेवात
18 जून से 24 जून, 2019
आर्य वीर दल पलवल
9 जून से 14 जून, 2019

आर्य वीरांगना दल

आर्य वीरांगना दल फरीदाबाद
2 जून से 9 जून, 2019
आर्य वीरांगना दल से. 4 गुडगांव
2 जून से 9 जून, 2019
वैदिक भक्ति साधना आश्रम
10 जून से 16 जून, 2019
गुरुकुल कुरुक्षेत्र
6 जून से 11 जून, 2019
इसके अतिरिक्त गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल कालवा, गांव भड़तना, गुरुकुल कुम्भखेड़ा, भिवानी, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़ में भी 6-6 शिविर लगेंगे।

- वेद प्रकाश, मन्त्री
आर्यवीर दल हरियाणा प्रदेश

डॉ. शिवकुमार शास्त्री जी को प्रधान बनने पर बधाई

आर्य जगत् की प्रसिद्ध संस्था आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) के वार्षिक निर्वाचन में डॉ. शिव कुमार शास्त्री जी वर्ष 2019-20 के लिए प्रधान निर्वाचित हुए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सन्देश परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं। *- सम्पादक*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 2 जून से 16 जून 2019
स्थान : गुरुकुल शिवालिक अलियासपुर अम्बाला (हरियाणा)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अध्यक्ष डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी की अध्यक्षता में शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। **प्रवेश शुल्क : शाखानायक : 500/-रुपये, उप व्यायाम शिक्षक एवं व्यायाम शिक्षक के लिए 600/- रुपये है** (पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।) विस्तृत जानकारी के लिए संयोजक श्री रविन्द्र सिंह 9991700034 से सम्पर्क करें।

- सत्यवीर आर्य, प्रधान संचालक, 9414789461

सार्वदेशिक आर्यवीरांगना दल के तत्त्वावधान में
राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

31 मई से 9 जून,19 : महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली, अजमेर (राजस्थान)

शिविरार्थी की आयु कम से कम 14 वर्ष हो। ⋆शिविरार्थी को शिविर स्थल पर 30 मई दोपहर 1 बजे तक अवश्य पहुंचना होगा। ⋆ सभी शिविरार्थी अपना नामांकन 31 मई दोपहर 1 बजे तक अवश्य करा लें। शिविर में शिक्षिका, सह शिक्षिका, नायिका की भी इस बार अलग कक्षाएं लगाई जाएंगी। परीक्षा में उत्तीर्ण आर्य वीरांगनाओं को प्रमाण पत्र दिए जाएंगे। *- साध्वी डॉ. उत्तमायति, प्रधान संचालिका, 9672286863*

गुरुकुल विद्यार्थियों के लिए आवश्यक सूचना

गुरुकुल से पढ़े हुए विद्यार्थी जो दिल्ली में रहकर आगे विद्या अध्ययन करना चाहते हैं और जिनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है, उनको आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 रहने तथा पढ़ाई में सहयोग करेगा। उन्हें समाज में रहते हुए यज्ञ, सत्संग और सेवा कार्यों में सहयोगी बनना होगा। जिन विद्यार्थियों में आर्य समाज के लिए लगन, निष्ठा, श्रद्धा तथा विश्वास है और जो भविष्य में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की भावना रखते हैं वे ही छात्र सहयोग के पात्र होंगे।

इच्छुक विद्यार्थी अपने आवेदन पत्र में नाम, पता, मोबाईल नं., ईमेल, योग्यता आदि लिखकर निम्नलिखित पते पर भेजें अथवा samajarya@yahoo.in पर ईमेल करें।

प्रधान/मंत्री, आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1
बी-31/सी, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली-110048

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज अमर कालोनी
नई दिल्ली - 110024

प्रधान : श्री जितेन्द्र कुमार डाबर
मन्त्री : श्री ओमप्रकाश छाबड़ा
कोषाध्यक्ष : श्री सुभाष चन्द्र आर्य

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा **आजीवन शुल्क** (मात्र दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

- सम्पादक

वैदिक शगुन लिफाफे
महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

शोक समाचार

श्री यशपाल बत्रा जी का निधन

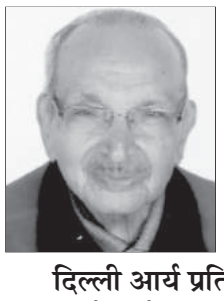

आर्यसमाज कीर्ति नगर नई दिल्ली के संस्थापक सदस्य, कर्मठ कार्यकर्ता पूर्व अधिकारी एवं वर्तमान संरक्षक श्री यशपाल बत्रा जी का 20 मई, 2019 को लगभग 92 वर्ष की आयु में अकस्मात् निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 23 मई, 2019 को सायं 4-5 बजे तक आर्यसमाज कीर्ति नगर मे सम्पन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

8 **साप्ताहिक आर्य सन्देश**

सोमवार 20 मई, 2019 से रविवार 27 मई, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 23-24 मई, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22 मई, 2019

प्रतिष्ठा में,

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) के अवसर पर करें पर्यावरण संरक्षण में सहयोग

2 से 5 जून तक आर्यसमाजें एवं आर्य संस्थाएं अधिकाधिक स्थानों पर

सार्वजनिक रूप से पर्यावरण शुद्धि यज्ञों का आयोजन करें

यज्ञ के अवसर पर वितरण हेतु प्रचार पत्रक एवं बैनर प्राप्त करने हेतु

श्री सन्दीप आर्य 9650183339 से सम्पर्क करें

देश और समाज विभाजन के षड़यन्त्र का पर्दाफास

आओ! जानें मनुस्मृति का सच

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

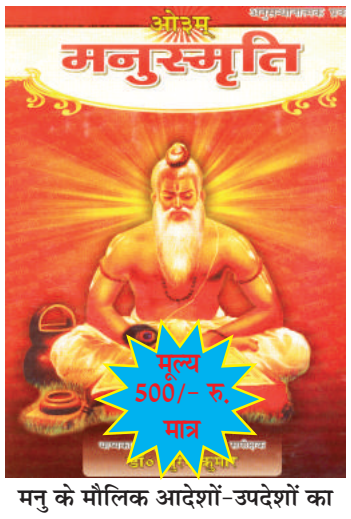

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

मूल्य : ~~600~~/- 500/-

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

ब्रेल लिपि में

महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/-रु

ब्रेल लिपि में

सत्यार्थ प्रकाश

मात्र 2000/-रु

अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

इन्हें कौन नहीं जानता!

इनके जीवन की हकीकत जानिये कहानी उन्हीं की जुबानी

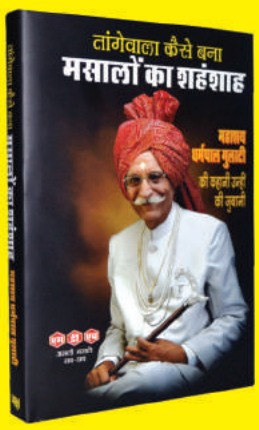

मूल्य: रु0: ~~325/-~~ 150/- पृष्ठ: 240/-

नई दिल्ली से कुतुबरोड़ तक एक तांगा चलाने वाला कैसे बना मसालों का शहंशाह

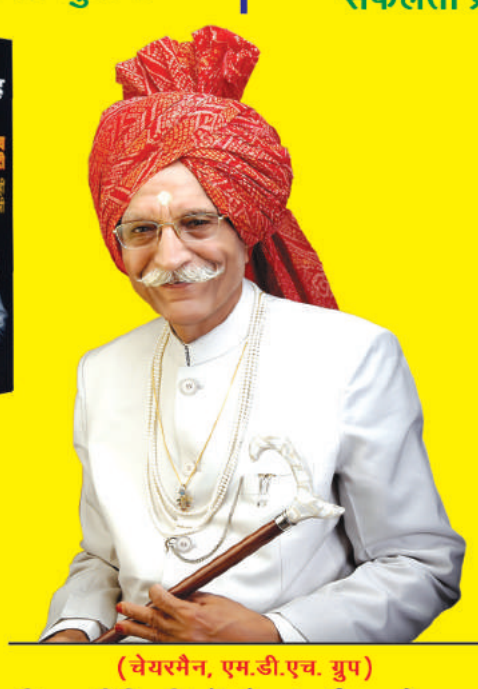

इनके जीवन को नई दिशा दिखाने वाले सफलता प्राप्ति के मूलमंत्र

मूल्य: रु0: ~~350/-~~ 200/- पृष्ठ: 168/-

इस पुस्तक का एक-एक अध्याय आपके जीवन को नई दिशा प्रदान कर सकता है।

(चेयरमैन, एम.डी.एच. ग्रुप)

"मैंने जिस तरह कठिन परिस्थितियों से संघर्ष करके सफलता प्राप्त की है वह लोगों के लिए भी मार्गदर्शक साबित हो सकती है।

आप इन किताबों को पढ़ें और मुझे अपने विचार लिख भेजें।

आपके पत्र की प्रतीक्षा में"

MDH असली मसाले सच-सच

महाशय धर्मपाल

-: पुस्तक मंगाने के लिए कृप्या लिखें अथवा फोन पर सम्पर्क करें :-

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह